भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-5, अंक-2	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा-25.00
बुधवार, 25 फर' 81	मानद सहसम्पादक: डॉ. महेन्द्र दवे-श्री विमल दवे	प्रति अंक : 2.25

कृपावतार स्वामिश्री सहजानंदजी

महाराज, स्वामी और जूनागढ़ मन्दिर

जूनागढ़ मंदिर के साथ मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी का सम्बन्ध कितना अभेद्य था यह तो हमने देख लिया। यह सम्बन्ध कराने वाले स्वयं भगवान स्वामिनारायण थे।

एक दिन गढडा में महाराज नीम के पेड़ की छाया में एक सुन्दर तख्त पर बैठे थे। तब उन्होंने सोचा कि जूनागढ़ में मंदिर-निर्माण करने का समय आ गया है। अतः महाराज ने सब बड़े-बड़े संतों को बुलाया और मंदिर-निर्माण का प्रस्ताव रखते हुए कहाः

''जूनागढ़ में मंदिर-निर्माण करना है। झीणाभाई ने हमें अपना स्थान दे दिया; दादा ने जो बाड़ी अपने लिये खरीदी थी। वह भी हमें दे दी है। जूनागढ़ के नवाब साहब ने भी दस्तखत कर दिये हैं। अब तो देरी हमारी है। कौन जायेगा जूनागढ़? वहाँ मन्दिर-निर्माण कर सकें ऐसे सन्त आगे आ जायें।''

महाराज की यह बात सबने सुनी, किन्तु महाराज तो स्वयं गढ़डा में ही रहेंगे और जूनागढ़ जाने से महाराज के सान्निध्य का लाभ नहीं मिलेगा ऐसा सोच कर सब ने चुप्पी साध ली। तब महाराज ने कहाः

''आप लोग जाने के लये तत्पर नहीं होंगे तो मुझे ही वहां (जूनागढ़) जाना पड़ेगा और मैं स्वयं वहां मंदिर-निर्माण में लग जाऊंगा। आप सब यही रहना।'' यह सुनकर मुक्तानन्द स्वामी ने कहाः ''महाराज ! आप यहीं रहिए। यदि आप की आज्ञा हो तो मैं वहाँ जाऊंगा।'' महाराज जानते थे कि मुक्तानन्दस्वामी अत्यन्त वृद्ध हो गये हैं। और उनको तपेदिक की बीमारी है। अतः उनको कैसे आज्ञा दें? अतः शीघ्र ही कहाः '' नहीं वहाँ आप नहीं बल्कि शरीर, मन, बुद्धि, आदि से सुदृढ़ निर्गुणानन्दस्वामी वहां जायेंगे।''

निर्गुणानन्दस्वामी अर्थात् गुणातीतानन्दस्वामी सभा में सबसे अन्तिम श्रेणी में बैठे थे। इन्होंने महाराज की आज्ञा सादर शिरोधार्य की, किन्तु संकोच वश कहाः ''महाराज ! आपकी आज्ञा से मैं निश्चित जूनागढ़ जाऊंगा, किन्तु वहां के राज्य की मदद ले सकें ऐसे बड़े सद्गुरु यदि साथ में रहेंगे तो अच्छा रहेगा। श्रम करने के लिये तो मैं तत्पर हूं ही।'' जब

स्वामी ने ऐसा कहा तब महाराज ने स्वामिश्री की आँख से आँख मिलायी और स्वामिश्री को असाधारण अनुभव हुआ। महाराज की आंखों से एक अद्‌भुत शुभ्र तेज प्रकट हुआ और वह तेज स्वामिश्री की आँख द्वारा उनके समग्र अस्तित्व में व्याप्त हो गया। उस प्रकाश के प्रकाट्य से मानो अक्षर पुरुषोत्तम का ऐक्य सिद्ध हो गया। यह घड़ी मानवजाति के लिये धन्य घड़ी हो गई। क्योंकि उसी क्षण महाराज ने धर्मकुल की स्थापना की ! साधुता युक्त संत तो महाराज के सान्निध्य में बहुत थे, किन्तु महाराज तो गुणातीतानंदस्वामी के माध्यम से अन्यों को साधुता प्रदान करने और 'पारस' उत्पन्न करने को शाश्वत परंपरा खड़ी करना चाहते थे। अतः 'अक्षर' में 'पुरुषोत्तम' ने प्रवेश किया और उनके सहचर्य से एक अद्वितीय परंपरा निर्मित हुई जो आज तक विद्यमान है और अनादि काल तक रहेगी। जूनागढ़ मंदिर का निर्माण केवल निमित्त था। वास्तव में महाराज उससे भी महत्वपूर्ण कार्य कर रहे थे।

यह अपूर्व संयोग, यह अपूर्व अनुभव–पूर्ण रूप से घट गया तब सद् मुक्तानन्दस्वामी ने कहाः 'गुणातीतानंदस्वामी ! महाराज के संकल्प से आप जूनागढ़ जाईए। आप की सहायता के लिये ब्रह्मानंदस्वामी आप के साथ जायेंगे।' ब्रह्मानंदस्वामी जानते थे कि गुणातीतानंदस्वामी महाराज के कृपापात्र है; और उनका सान्निध्य मिल रहा है यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता से जूनागढ़ जाने के लिये वह भी तैयार हो गये।

रत्ना मिस्त्री को दिव्य दर्शन

साधुगण की तो इस प्रकार जूनागढ़ के लिये नियुक्ति हो गई। अब शेष रही बात शिल्पी की खोज की। किसी ने कहाः 'गोंडल के रत्नाभाई मिस्त्री भगवद्‌भक्त भी है और अच्छे शिल्पी भी है।'' रत्नाभाई को बुलाया गया और कहा गयाः ''जूनागढ़ में मंदिर-निर्माण कार्य है वह आपको ही करना है; अतः गुणातीतानंदस्वामी और ब्रह्मानंदस्वामी के साथ आप जूनागढ़ जाईए।'' रत्नाभाई परेशान ! कहने लगेः ''महाराज ! आपकी आज्ञा तो शिराधार्य है, किन्तु मैंने अभी तक शिखर का कार्य नहीं किया है। आप आज्ञा करते हो अतः निश्चित जाऊंगा, किन्तु मैं कर पाऊंगा या नहीं इस बात में सशंक हूँ। महाराज ने मंदस्मित किया और कहाः ''जाइए, हमारा आशीर्वाद है। मंदिर सर्वोत्कृष्ट होगा।''

उसी रात रत्ना मिस्त्री को जूनागढ़ का आज का भव्य मंदिर स्वप्न में दिखाई पड़ा और वहाँ महाराज का दर्शन उन्हें हुआ। स्वप्नमूर्ति ने कहाः ''रत्ना मिस्त्री ! ठीक तरह से देख लीजिए, एक-एक भाग देख लीजिए। बस ऐसा ही मंदिर जूनागढ़ में निर्मित करना है।'' स्वप्न समाप्त हुआ और रत्ना मिस्त्री जागृत हो गए। किन्तु मन्दिर का मानचित्र पूर्ण रूपेण उनकी स्मृति में जड़ गया। रत्ना मिस्त्री मंदिरमय बन गये। प्रातः कर्म से निवृत्त होकर वह महाराज के पास गये और बोलेः ''महाराज ! आपने तो मुझे अक्षरधाम जैसा मंदिर दिखाकर धन्य कर दिया। अब मुझमें हिम्मत आ गई है। आप की कृपा से ठीक वैसे ही मंदिर का निर्माण हो जायगा।'' यह सुनकर महाराज अत्यन्त प्रसन्न हुए और रत्ना को कोटिशः आशीर्वाद दिये।

दर्शनों का आध्यात्मिक मूल्य

पाठकों को याद होगा कि गढ्‌डा मंदिर के निर्माण के पूर्व ऐसा अनुभव दादाखाचर को भी हुआ था। इस अनुभवों का आध्यात्मिक मूल्य असाधारण है। सृष्टि में नई घटना घटती ही नहीं है। सब घटित हो ही चुका है। किताब तो सृष्टिकर्ता ने कब से लिख दी है। हमारे चर्मचक्षु को वह ज्ञात नहीं है। जैसे-जैसे पन्ने उलटते हैं, जैसे-जैसे घड़ी-पल बीततें हैं, वैसे-वैसे हमें ज्ञात होता रहता है। भगवान त्रिकालज्ञ ही नहीं, त्रिकाल के निर्माता है; अतः उनसे क्या अज्ञात ! वे

महाप्रभु कभी-कभी मानव की हिम्मत बढ़ाने के लिए परदा उठा लेते हैं और भविष्य स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। रत्ना मिस्त्री की आँख को वह सुन्दर भावि दृश्य दिखा दिया और उनको संबल मिल गया। इस बात से दूसरी यह भी शिक्षा मिलती है कि भगवान ने तो कब से पूरी सृष्टि की रचना कर दी है। हमें केवल निमित्त बनाते हैं। इस ज्ञान से हमारा कृर्तृत्व का भाव और बोझ छूट जाता है। हमको निमित्त बनाया यह उनकी कृपा है !

मंदिर का भूमिपूजन

अब जूनागढ़ प्रस्थान का क्षण आ पहुँचा। मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी, सद् ब्रह्मानंदस्वामी और उनकी संत मंडलियाँ, रत्ना मिस्त्री सब तैयार है। केवल महाराज का इंतजार है। महाराज आ पहुँचे। सबको अपने पास बुलाया। सबको अत्यंत प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया और ब्रह्मानंद स्वामी को कहाः ''जहाँ दादा की बावड़ी है वहाँ तीन शिखर युक्त उत्तम मंदिर का निर्माण कीजिए।''

और....महाराज का आशीर्वाद लेकर सब चल पड़े।

वे सब जूनागढ़ पहुँचे मात्र आशीर्वाद के उनके पास क्या था? और वहाँ जाकर देखा कि अन्य पंथी लोग इस मंदिर के निर्माण के विरुद्ध थे। काफी व्याधियाँ थीं, किन्तु महाराज के आशीर्वाद से इतनी हिम्मत थी कि टकराये तो पहाड़ को चूर-चूर कर दें। योगमूर्ति गोपालानंदस्वामी भी जूनागढ़ आ गये। भूमिपूजन कौन करेगा? पू. गोपालानंदस्वामी ने स्पष्ट कहाः ''निश्चित गुणातीतानंदस्वामी''। और.... स्वामिश्री को बुला कर कहाः ''देखिए, आगे जाकर आप को ही यहाँ रहना है। आप पर ही वह दायित्व आने वाला है, अतः आप ही भूमिपूजन कीजिए।'' इस प्रकार वि.सं. 1442 के वैशाख मास की अक्षय तृतीया के दिन ब्रह्मविद्या के केन्द्र गुणातीत-गंगोत्री का प्रारंभ हुआ जो आज महानद बन कर विश्व में फैल रही है।

महाराज का सहृदयभाव

रत्ना मिस्त्री व साधु संत जिन परिस्थितियों में कार्य कर रहे थे इनसे महाराज अनजान नहीं थे। उनका महाराज कितना खयाल रखते थे इसके लिए एक ही उदाहरण पर्याप्त होगा। एक बारा सच्चिदानंद स्वामी हरिभक्तों द्वारा महाराज को समर्पित रूप में सोने जैसा और स्वाद में शर्करा जैसा मीठा गुड़ सिर पर उठा कर प्रेम से लाये और.....वह महाराज को निवेदित करें इसके पूर्व ही महाराज ने कह दियाः ''यह गुड़ मेरे साधुओं के लिये है। ये साधु जूनागढ़ जा रहे हैं इनको दे दीजिए।'' हद हो गई ! किन्तु सच्चिदानंद स्वामी कहें भी क्या? ऐसा था महाराज का प्रेम ! कभी महाराज ब्रह्मानंदस्वामी को अपने पास बुला लेते थे, कभी जूनागढ़ भेज देते थे। उद्देश्य यही था कि वहाँ के लोग उब न जायें; उनको अकेलापन न लगे।

उत्तम पाथेय

महाराज के दर्शन का, महाराज के सन्निध्य का लोभ किसको नहीं होगा? स्वामी को भी था। एक बार वे आनंदस्वामी की मंडली के साथ गढड़ा आये थे। महाराज ने स्वामी को कहाः ''स्वामी ! आप जूनागढ़ जाईए।'' एक ओर महाराज की आज्ञा की आज्ञा और दूसरी ओर महाराज के दर्शन की तीव्र इच्छा ! किन्तु स्वामी ने दर्शन से, सान्निध्य से अधिक समागम ही माना था और सच्चा समागम आज्ञा पालकता में ही है यह वे जानते थे। महाराज की मूर्ति का अखंड दर्शन तो अंतर में था ही किन्तु 'प्रत्यक्ष मूर्ति का खिंचाव रहे यही हमारी भक्ति है'—इस आदर्श को वे यूं हमारे समक्ष रखते थे। महाराज ने

तत्त्वानंदस्वामी को साथ के रूप में दिया। जूनागढ़ जाने के पूर्व आज्ञा लेने के लिये जब स्वामी आये तब कहाः ''आप जूनागढ़ जा रहे हो वह ठीक है। हम आपको पाथेय देते है'', कह कर निम्नलिखित साखियाँ महाराज बोलेः

''निर्गुण ब्रह्म सुलभ अति, सगुण न जाने कोई,
सगुण चरित्र नाना विधि, सुनी मुनि मन भ्रम होई।''

[निर्गुण ब्रह्म तो अति सुलभ-सरलता से प्राप्य है, किन्तु उसके प्रगट स्वरूप को कोई (जीव) पहचानता नहीं है। क्योंकि सगुण के (मनुष्य स्वरूप के) विविध प्रकार के चरित्रों को देखकर महान मुनियों के चित्त में भी भ्रम उत्पन्न हो जाता है।]

दंड पतिन कर भयो जहाँ, नर्तक नृत्य समाज,
जीत्यो मन परा जानीए, रामचन्द्र के राज।

[–जहाँ रामचंद्रजी का राज्य है–अर्थात्–जहाँ प्रगट पुरुषोत्तम या भगवत्स्वरूप संत है–वहाँ मन को जीतने वाले दंडधारी मुनिगण भी होते है जो नर्तक (मूल आत्मस्वरूप) और उससे भिन्न नृत्य समाज (अर्थात्–इन्द्रियाँ, अंतःकरण) को स्पष्ट जानते हैं।]

उमा अवधवासी नर-नारी कृतारथ होय;
ब्रह्म सच्चिदानंद रूप रघुनाथ जहाँ भूप।

[भगवान शंकर भगवती पार्वती जी को कहते है कि हे उमा ! जहाँ रघुनाथ अर्थात् जहाँ प्रगट पुरुषोत्तम होता है वहाँ सच्चिदानंद रूप ब्रह्म ही होता है। उनके समागम में आने वाले वे नर हो या नारी कृतार्थ हो जाते हैं।]

प्रगट स्वरूप की महिमा की ये अत्यंत भावपूर्व साखियाँ स्वामी को भेंट में देकर महाराज ने कहाः ''स्वामी ! जूनागढ़ में आपका जो दर्शन करेंगे, जो आपका समागम करेंगे; जो आपके साथ रहेंगे; जो आपको सहाय होंगे उन सबकी करोड़ जन्मों की कमी मैं एक जन्म में ही नष्ट कर दूंगा।''

जितनी महत्त्वपूर्ण सखियाँ थी इतने ही महत्त्वपूर्ण ये वचन थे। इनसे जहाँ एक और महाराज का मंदिर निर्माण का उद्देश्य स्पष्ट होता है तो वहीं दूसरी ओर उनके जीवन का दर्शन–(प्रगट ब्रह्म का गौरवपूर्ण महत्त्व और उनके द्वारा ही मोक्ष प्राप्ति) भी स्पष्ट होती है। स्वामी को महाराज कितना मानते थे; स्वामी के साथ वे कितने थे और स्वामी द्वारा–जूनागढ़ मंदिर के निर्माण द्वारा महाराज क्या करना चाहते थे वह भी इससे स्पष्ट होता है।

कष्टों की परिसीमा और स्वामिनारायण भगवान की जय जयकार

किन्तु जूनागढ़ में कोटि कोटि विघ्न थे। यहाँ के अफसर लोग स्वामिनारायण (धर्म) के खिलाफ थे। उन्होंने सोचा कि यदि स्वामिनारायण का मंदिर यहां बन जायेगा तो हमारे धर्म का मान कम हो जायेगा। किसी भी प्रकार इस मंदिर निम्ग्रण का कार्य रुक जाना चाहिए। परमात्मा की लीला थी; उस साल बारिश काफी देर तक नहीं आई। जूनागढ़ रियासत में पानी कम, घास भी कम! अपसर लोग चल पड़ नवाब साहब के पास और कहाः ''स्वामिनारायण के मंदिर की जो नींव भर दी गई है इसमें इन साधुओं ने अभिमंत्रित हड्डी का चूरा डाला है। परिणाम स्वरूप हमारी रियासत में इस साल तो क्या दो तीन साल तक बारिश नहीं आयेगी।'' नवाब ने कहाः ''स्वामिनारायण तो औलिया है और उनके साधु फकीर जैसे है वे ऐसा क्यूं करेंगे?'' अफसरों ने उत्तर दियाः ''अपना मंदिर मुफ्त में और शीघ्र बनवाने का यह प्रपंच है। यदि बारिश नहीं होगी तो मजदूर सस्ते में मिल जायेंगे और मंदिर उनकी इच्छानुसार पूर्ण हो जायेगा।'' नवाब को लगा अफसरों की बात ठीक है। उन्होंने पूछाः ''इसका उपाय क्या है?'' अफसरों ने कहा कि उपाय एक ही है। ''आज तक जो कुछ हुआ है इसको खुदवा डालो और हड्डी के चूरे को

अंदर से बाहर निकलवा दो।'' नवाब ने कहाः ''ठीक है।'' यूँ कह करके इनको विदा देकर नवाब ने ब्रह्मानंदस्वामी को बुलाया और सारी बात कही। स्वामी समझ गये कि यह सब अफसरों का प्रपंच है। अतः स्पष्ट कहाः ''सरकार ! हम तो साधु है। हम यदि हड्डी को भूल से भी छू लें तो हमें वस्त्र सहित स्नान करना पड़ता है। अतः यह जो हड्डी के चूरे की बात आपको बतायी गई है वह गलत है; तथापि आपकी शंका के समाधान के लिये आप यदि नींव खुदवाना चाहते हो तो खुदवा लें; किन्तु यदि खुदने के बाद नींव से अभिमंत्रित हड्डी का चूरा न निकले तो खुदवाने का और फिर निर्माण करने का खर्च इन अफसरों को देना पड़ेगा। चाणक्य-बुद्धि ब्रह्मानंदस्वामी की यह स्पष्ट बात नवाब ने उन अफसरों को कह दी। यह सुनकर अफसर लोगों ने कहाः ''हम क्यों खर्च दें !'' तब ब्रह्मानंदस्वामी ने कहाः ''सरकार ! अब आ गई न बात सामने ! इनका मन अवश्य ही मलिन है। इनका ध्येय मंदिर निर्माण नहीं होने देना है, अतः प्रपंच करते है; किन्तु संसार चक्र इनकी इच्छानुसार नहीं चलता है। हमारे भगवान स्वामिनारायण की कृपा से इस मंदिर का निर्माण निश्चित होगा और ये लोग अपनी आँख से उसको देखेंगे भी।'' नवाब का संशय नष्ट हो गया और उन्होंने ब्रह्मानंदस्वामी को कहाः ''जाईए और प्रेम से मंदिर का कार्य आगे बढ़ाईए।'' अंतर्यामी भगवान स्वामिनारायण को सब कुछ ज्ञान था। उन्होंने ब्रह्मानंद स्वामी को पत्र में लिखाः

''आप नवाब साहब के पास जाना और कहना कि आज से तीसरे दिन बारिश होगी।'' नवाब ने जब यह सुना तब कहाः ''खुदा की कितनी रहम है !'' तीसरे दिन मुसलाधार बारिश हुई.....सर्वत्र प्रसन्नता फैल गई और स्वामिनारायण का जय जयकार हुआ !

–क्रमशः

Religion..... .....the Opiate?

"Religion is the opiate of the people" i.e. it gives false hopes to the people. It is pleasing illusion, a false vision, effects hypnosis or exerts a mesmeric or hypnotic effect"-How far is this true?

This question has to be understood in two ways. What the common man understands about other items, things and objects like narcotics and other drugs, LSD and other tablets, similarly one has also to understand this problem. In great tensions when these drugs are taken they give an impression, an illusion, ,a visualisation, a hypnotic effect when one feels himself the master of all the things. One forgets the miseries, the worries, the tensions. Such drugs, narcotics and tablets naturally affects the mind, the sentiments, the feelings, the heart in such a stimulating way that one feels that he is in heaven. Just as one gets absorbed into poetry or into speculative imagination, in the same way these drugs also affect objectively and if they are taken in excess then one forgets the real self, is rendered unconscious and babbles certain things incoherently. In the same way objectively, at the physical level, as long as mind is there, emotions are there, our ingredients-mind, chitta, prana, intellect and ego are there, if devotion or knowledge or even experience of the objective things of Guru or of the idol or of the deities is done, then naturally it will also create certain hypnotic effects, certain fulfilments, certain exhilerating feelings in the category of relations from the conscious awareness. Here, whatever the object is, when there is no total vision of it with full attention and interest, then such things happen in religion also. Both the

things are worked out under the complex mind i.e. fear, security, sex, which is a subtle phenomenon. It is the sort of psychoanalysis; the psychiatrist calls hypnotic effect. It also happens in auto suggestion. But these are all objective things and psychophysical phenomenon. It is true that here the mantra or Guru or the deity objectively effects like the tranquiliser giving temporary relaxation and the resultant effect is mental visions and make-believe imaginatiosn, whereby momentary relief is achievd. Some consier it trance (Samadhi).

In another sense, if any object at the physical level taken in excess or accepted intensively then also a little unconscious effect is felt. Even in religion, too much devotion is always dangerours. An objective renunciation or austerity or tapasya or meditation or mantra-japping for millions of times may also render the strong hypnotic effect. It may induce sleep and also can have visions, as may be contemplated by the mind. In that sense, relatively viewed the statement 'religion is the opiate of the people', which means it gives false hopes to the people, whereby they fully rely on the sadguru or the Ishtadevta, without doing any real Sadhana or individual efforts or their own Swadharma or whatever duties they have to do in a normal way. So all these mantras, means and methods at the mind level create a sort of hypnosis and false visions and in that category this statement is correct.

In all religions, generally for the purificatroy process if this tapasya, meditation or prayer is done with the mind or remaning in the ego-sense, then it will be definitely creating hypnosis and false vision and, therefore, religion has also not contributed in the change of the personality or the actions in the right dirction. That sort of mantra or meditation is a good tranquilliser and it serves the purpose of a temporary relaxation but there is no permanent change, no permanent effect and the same old habits of the mind or the subconscious based on fear, security, sex and ego-sense merge even in Yogis and Siddhapurushas. It means they have not transcended the mental consciousness or the psychophysical levels. Ninety per cent of the people in all religions offer their prayers, meditations and their sadhana for fear, security, sex and ego-complexes, Here there is a lack of understanding. Human being is also animal in one sense, because he has inherited all these animal instincts. But at the same time God has given him intelligence, and also given him the choice and man is a rational being. He has the brain and the heart and also the inner vision. Spiritual masters like Buddha, Mahavira, Rama, Krishna, Nanak, Sahejananda and the brahminise saints have set an example by their purity, equality, humbleness, charity and compassion for this divine life, which is the essence of true religion. But if anything is done in excess then naturally the same element deforms and there you require inevitably, the real spiritual master, who can work out like the homeopathic doctor and the same instincts and emotions and sentiments and intellect will be purified under the special instructions regulating the life, whether of an ascetic or of house-holder, and will lead to maturity. Here there is no question of blind faith nor stimulating effect, nor logic, but a sort of real understanding of the objects as they are with their own nature and at the same time subjectively the very life which we had, which is based on human lelationship, not on fear but on pure love or compassion. Such spiritual masters work like the sun who gives out the light to all without any distinction, to the ascetic saint or to the prostitute, to the goonda or to any sidhapurusha. He doesno't

expect anything but works out unceasingly and like the sun extracts water from the sea and gives rain by forming the clouds the real satpurusha thus works out in this manner. There have been examples of such divinised personalities throughout the universe in the east as well as in the west like Jesus, Lao-t-se and a number of other saints.

In this category religion is not the opiate of the people. It is the relatioship with the supreme controller of this world and the universe and this example is universally known by the working of Lord Krishna. He was the master of all the arts and at the same time He lived as a common man, as an ordinary human being, though He was Almighty supereme power whom we call an Avatar (incarnation). He was not merely human but at the same time, fully sharing with the human beings thus he was really divine, which could be felt like the electric power by all human beings and that is the song of Gita, the song of devotion, the song of love and knowledge which ultimately leads to self relisation or to Sacchidananda relisation. This is not merely visualisation, not merely imagination but the stark reality in this life and as long as there is duality, whether in this world with the drugs or narcotics or LSD or with the means or meditation, tapasya or prayer or devotion when taken or done at the mental level, at the physical level, there will always be false hopes, ignorance.,conflicts, chaos, confusion and tension. But in the company of the spiritual master and under his guidance the same element even if taken in excess will nourish the sadhak instead of creating false illusions.

Our Vedic culture had the comprehensive vision, had the total vision where our Rishis experienced and at the same time realised the real beauty of nature, the real beauty of life and the real beauty of theEternal Reality and then they uttered in a natural way, beyond mind from their pure consciousness, the eternal and the pivotal truths of life, the universe, of the objects and subjects. They have been handed over in our vedic culture in the form of Upanishads and all the Upanishads talk about one denominator, one common eternal element whom we call the 'Brahman." This is the actual fundamental fact arleady realised by Spiritual Masters throughout the ages but that unique experience is not common to all, only a Rama, a Buddha, and a Mahavir-in single life-realised it and there were hardly one or two disciples who could be as equal totheir masters in the God-like manner. This is the spiritual history of 20,000 years when mind developed from the animal instincts and now with latest incarnation of Lord Swaminarayana there is special enlightenment where reason and faith will be reconciled and from that view point this statement is not correct.

There have been disciples like Arjuna, Radha, Laxmiji, Savitri, Gargi, not merely mythological but even in present time today, there have been such enlightened souls, as Sri Aurbindo has said, who can workout under supernatural consciousness. Their life is pure, simple, full of real austerity, humbleness, purity and they spread their eternal message of liberation of the soul and also the transformation and even mastery over the crude nature leading to perfection in this life. This is what we call divine. So in short, any mantra, meditation or means or tapasya, if not understood in its real spiritual meaning then it will surely create false hopes. Those visions also would be false. There is no discrimination and it has no value or no truth behind it. All religions will have therefore, to start as a first step with this true reality, this world, this life and of this universe and its controller. Then surely if the first step is right,

then all actions will be in the right direction. There is nothing like good or bad, right or wrong but only there is eternal truth and duality of false hopes. If there is sun then there cannot be any darkness. Both the things have to be understood. Too much light is also darkness. So, human being has to go beyond this duality, on which principle the whole world is governed and that is only possible through the medium of those enlightened souls. who have transcended this duality. They are known as supremely realised souls or Ekantik Satpurursha and if we could have, in a child-like manner, our relationship with such masters or with such divine mothers then we will be fully protected. At every seven years of age with the changing of all those natural instincts and hormones, he will be a fully matured person and can lead to creative, dynamic life, remaining in this world with the heaven in the heart and heaven outside and also life beyond which is known as eternal life. Let those gurus then understand that those means of purification of the soul should not end at that point only objectively, but should go beyond all these appearances where the universal soul is working. This is the real knowledge of 'Brahman', but merely knowledge and experience will not do. One has to realise it and such realisation is only possibe through the liberated, realised souls.

Relatively speaking, therefore, in most cases, what goes by the name of religion may be the opiate of the people, but there have been also certain awakened and enlightende souls like Pujya Kakajee, Pujya Papajee and Pujya Swamijee with whom this statement does not hold true, and definitely, positively and surely real spiritual technique will lead to bliss and liberation, not after death but even here in this life. There have been such examples, but if one has the intense aspiration for it then only such sadguru will come to him i.e. to that sadhaka, to that truth seeker and he will have surely not merely hypnotic effect but like the atomic energy it will create a dynamic life pulsating with the intoxication of the Divine, transforming life once and for all and for all time and not just fo a while as long as the narcotic lasts in the case of hypnosis. May God bless us all for that divine total vision.

-Hemant Merchant

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	2.3.81	सोमवार	विजया एकादशी, व्रत
2.	दि.	14.3.81	शनिवार	नवमी, श्री हरिजयंती
3.	दि.	16.3.81	सोमवार	एकादशी, व्रत
4.	दि.	2` .3.81	शुक्रवार	हुताशनि, पू. भगतजी महाराज का प्राकट्यदिन
5.	दि.	1.4.81	बुधवार	एकादशी, व्रत
6.	दि.	9 से 12.4.81	गुरुवार से रविवार	श्री स्वामिनारायण द्विशताब्दी महोत्सव-सोखडा
7.	दि.18	और 19.4.81	शनि और रविवार	श्री स्वामिनारायण द्विशताब्दी महोत्सव-दिल्ली

Published by Sadhu Mukundjivandas for Yogi Divine Society,
A 103, Ashokvihar-III, Delhi-110 052. India, Tel. 718838
Printed at Thakkar printing press, 2588, Basti Punjabian, Subzi Mandi, Delhi-110 007 Phone : 524058